४. संयम का सौन्दर्य

एक राजा रुग्ण हो गया। अनेक उपचार करवाये तो भी राजा स्वस्थ नहीं हुआ। अन्त में एक अनुभवी वैद्य ने राजा को कहा मैं आपको पूर्ण स्वस्थ बना सकता हूँ, पर शर्त यही है कि आपको मेरी बात माननी होगी। मैं जो भी कहूँ वैसा आपको करना होगा। व्याधि से संत्रस्त राजा ने स्वीकृति सूचक सिर हिला दिया। चिकित्सा प्रारम्भ हुई और कुछ ही दिनों में राजा पूर्ण स्वस्थ हो गया। वैद्य ने विदाई लेते हुए कहा—राजन्! आप रोग से मुक्त हो चुके हैं पर अब आपको मेरे बताये हुए पथ्य का अच्छी तरह से पालन करना होगा।

राजा ने पूछा—बताओ, कौन-सा परहेज है, ऐसी कौन सी वस्तु है जिसका उपयोग मुझे नहीं करना है।

वैद्य ने कहा—आम का फल आपके लिए जहर है जीवन भर आपको आम नहीं खाना है।

राजा को आम अत्यधिक प्रिय थे। वह हर ऋतु में आम खाता था। जब उसने यह सुना कि आम नहीं खाना है तो उसने पुनः वैद्य से जिज्ञासा प्रस्तुत की—बताइये, दिन में कितने आम खा सकता हूँ।

वैद्य ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि एक भी आम आप नहीं खा सकते। यदि भूलकर आपने आम खा लिया तो फिर किसी भी वैद्य और चिकित्सक की शक्ति नहीं कि आपको बचा सके। इस परहेज का पालन करेंगे तो आप सदा रोग से मुक्त रहेंगे।

राजा ने वैद्य की बात सहर्ष स्वीकार ली। चैत्र का महीना आया। आम के फल वृक्षों पर मंडराने लगे। कोयल के कुहूक की आवाज कुहकने लगी। राजा ने अपने मन्त्री से कहा—चलो, लम्बा समय हो गया है महलों में बैठे-बैठे। जी घबरा उठा है। मन बहलाने के लिए बगीचे में घूमने की इच्छा हो रही है।

मंत्री ने कहा—राजन्! घूमने के लिए महल की छत बहुत ही बढ़िया है, यदि वह पसन्द नहीं है तो तालाब के किनारे चलें, जहाँ पर शीतल मंद सुगन्ध पवन चल रहा है, नौका विहार करें। पर राजा तो बगीचे में जाने हेतु तत्पर था। मंत्री उस बगीचे में ले जाना चाहता था जिस बगीचे में आम के पेड़ नहीं थे। पर राजा ने यह हठ की कि मुझे आम खाने की मनाई की है, किन्तु आम के पेड़ों की हवा खाने की थोड़े ही मना की है।

मंत्री ने कहा—राजन् जिस गाँव में नहीं जाना है, उस गाँव का रास्ता क्यों पूछना? वैद्य ने आपके लिए स्पष्ट शब्दों में निषेध किया है। कृपा कर आज आम के बगीचे की ओर घूमने हेतु न पधारें।

राजा ने कहा—तुम बहुत ही भोले हो। वैद्य तो केवल मानव को डराने के लिए ऐसी बात कहते हैं। वैद्य की बात माननी चाहिए, पर उतनी ही जो उचित हो।

मंत्री ने कहा—आप अपनी ओर से मौत को निमन्त्रण दे रहे है। मेरी बात मानिये और आम के बगीचे की ओर न पधारिये।

राजा ने कहा—वैद्य ने आम खाने का निषेध किया है, आम के पेड़ों की हवा खाने के लिए निषेध नहीं किया है। चलो कई महीनों से आम के बगीचे में नहीं गये हैं। राजा आम के बगीचे में

साध्वीरत्न कुसुमवती अभिनन्दन ग्रन्थ
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पहुँच गया। वृक्षों पर पके हुए आम हवा से झूम रहे थे। बगीचे में घूमकर राजा आम के पेड़ के नीचे विश्रान्ति हेतु बैठ गया। मंत्री ने निषेध किया पर वह नहीं माना। ज्योंही वह वृक्ष के नीचे बैठा त्योंही एक आम का फल राजा की गोद में आकर गिर पड़ा। राजा हाथ में लेकर फल देखने लगा। उसकी मीठी-मीठी मधुर गंध पर वह मुग्ध हो गया। मंत्री राजा के हाथ से फल छीनना चाहता था, पर राजा ने कहा—जरा-सा आम चूसने से कोई नुकसान होने वाला नहीं है। मंत्री मना करता रहा पर राजा ने आम को चूस ही लिया और देखते ही देखते राजा के शरीर में पुराना रोग उभर आया और कुछ क्षणों तक छटपटाते हुए राजा ने संसार से विदा ले ली।

प्रस्तुत उदाहरण भगवान् महावीर ने अपने पावापुरी के अन्तिम प्रवचन में दिया है और कहा है जिस प्रकार राजा अपथ्य आहर कर अपने आपको, अपने राज्य को गंवा बैठा, वैसे ही संयमी साधक इन्द्रियों के प्रवाह में बहकर अपने संयम धन को गंवा देता है। इन्द्रियाँ उच्छृंखल हैं जो इसके प्रवाह में बहता है, वह साधना के पथ पर नहीं बढ़ सकता एतदर्थ ही शास्त्रकारों ने इन्द्रिय संयम पर बल दिया है। इन्द्रिय संयम करने वाला साधक साधना के पथ पर निरन्तर बढ़ता है।

एक शिष्य ने आचार्य से जिज्ञासा प्रस्तुत की—शास्त्रों में लिखा है कि इन्द्रियाँ प्रबल पुण्यवानी से प्राप्त होती हैं। एकेन्द्रिय अवस्था में केवल एक ही इन्द्रिय होती है पर ज्यों-ज्यों अकाम निर्जरा के द्वारा प्रबल पुण्य का संचय होता है तब क्रमशः इन्द्रियाँ प्राप्त होती हैं। आप पुण्य से प्राप्त उन इन्द्रियों के नियन्त्रण हेतु क्यों उपदेश देते हैं? क्योंकि बिना इन्द्रियों के न ज्ञान हो सकता है, न ध्यान हो सकता है। इसलिए इन्द्रियाँ हमारी शत्रु नहीं मित्र है। विकास के मार्ग पर हमें अग्रसर करने वाली है। फिर उनके नियन्त्रण का उपदेश क्यों?

आचार्य ने कहा—वत्स! यदि राग-द्वेष के प्रवाह में न बहे, समभाव में अवगाहन करें तो इन्द्रियाँ परम मित्र की तरह उपयोगी हैं। यदि इन्द्रियों में राग-द्वेष का प्रवाह प्रवाहित होने लगता है तो इन्द्रियाँ शत्रु बन जाती हैं। गंगा का पानी पवित्र और निर्मल है पर जब गंगा में फैक्ट्रियों का, शहरों की गन्दी नालियों का पानी मिल जाता है तो गंगा का पानी भी दूषित हो जाता है, उसकी पवित्रता नष्ट हो जाती है। जब इन्द्रियों के निर्मल ज्ञान में काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, राग और द्वेष का कूड़ा-करकट मिलता है तब इन्द्रिय ज्ञान भी दूषित हो जाता है। उस समय इन्द्रियाँ शत्रु बन जाती हैं। राग-द्वेष का जब तक मिश्रण नहीं होता तब तक इन्द्रिय-ज्ञान गंगा के पानी की तरह निर्मल रहता है पर राग-द्वेष के मिश्रण से वह विषाक्त बन जाता है।

हम जैनागम साहित्य का गहराई से अनुशीलन करें तो यह सत्य हमें सहज रूप से समझ आ सकेगा। इन्द्रियाँ केवलज्ञानियों के भी होती हैं। वे भी चलते हैं किन्तु उनकी इन्द्रियों में राग-द्वेष का मिश्रण न होने से उनको केवल ईर्यापथिक क्रिया लगती है। साम्परायिक क्रिया नहीं। ऐर्यापथिक क्रिया में राग-द्वेष न होने से कर्म बन्धन नहीं होता। भगवती सूत्र में स्पष्ट वर्णन है कि केवल-ज्ञानी को पहले समय में कर्म आते हैं, दूसरे समय में वेदन करते और तीसरे समय में वे कर्म निर्जरित हो जाते हैं। कर्म बन्धन के लिए असंख्यात समय चाहिए और बिना राग-द्वेष के कर्म का बन्धन नहीं होता। जब इन्द्रियों रूपी तारों में राग-द्वेष का करंट प्रवाहित होता है तभी कर्म बन्धन होता है इसीलिए ज्ञानियों ने प्रेरणा दी कि इन्द्रियों का संयम करो।

हमारी इन्द्रियां बहिर्मुखी हैं। वे बाहर के पदार्थों को ग्रहण करती हैं और राग-द्वेष से संपृक्त होकर कर्मों का अनुबन्धन करती है जितना अधिक तीव्र राग या द्वेष होगा उतना ही अधिक बन्धन होगा, निकाचित कर्म बन्धन का मूल कारण इन्द्रियों में राग-द्वेष का तीव्र प्रवाह ही है। तीव्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवाह जब प्रवाहित होता है तब तीव्र गाढ़ बन्धन होता है। जब इन्द्रियों का प्रवाह अन्तर्मुखी होता है वह संयम कहलाता है।

भारतीय साहित्य में कूर्म का उदाहरण बहुत ही प्रसिद्ध रहा है चाहे जैन परम्परा रही हो, चाहे वैदिक परम्परा और चाहे बौद्ध परम्परा। सभी ने कूर्म के रूपक द्वारा यह बताया है कि कूर्म जब खतरा उपस्थित होता है, तब वह अपनी इन्द्रियों को गोपन कर लेता है। जब इन्द्रियों को गोपन कर लेता है तब कोई भी शक्ति उसे समाप्त नहीं कर सकती। इन्द्रिय संयमी साधक को भी कोई भी बाह्य पदार्थ अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। जैन साहित्य के इतिहास में आचार्य स्थूलभद्र का उदाहरण आता है। स्थूलभद्र कोशा वेश्या के वहाँ पर १२ वर्ष तक रहे। पिता की शवयात्रा देखकर उनके मन में वैराग्य भावना उद्बुद्ध हुई और वे साधना के महापथ पर वीर सेनानी की तरह बढ़ गये। तथा गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य कर वे चार माह तक कोशा के वहाँ पर रहे। उस रंगमहल में रहकर भी उनका मन पूर्ण विरक्त रहा और वेश्या को भी उन्होंने वैराग्य के रंग में रंग दिया। यही कारण है मंगलाचरण में भगवान महावीर और गौतम के पश्चात् उनका नाम आदर के साथ स्मरण किया जाता है। एक आचार्य ने तो लिखा है—इन्द्रिय विजेता स्थूलभद्र मुनि का नाम चौरासी चौबीसी तक स्मरण किया जाएगा।

इतिहास के पृष्ठ इस बात के साक्षी हैं कि जो राजा-महाराजा और बादशाह इन्द्रियों के गुलाम बने उनका पतन हो गया। और उनके कारण देश परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ा गया। देश को परतन्त्र बनाने वाले इन्द्रियों के गुलाम रहे। इसी-लिए महामात्य कौटिल्य ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि शासक और सामाजिक प्राणी को इन्द्रियविजेता होना चाहिए। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी, आध्यात्मिक जीवन के लिए अतीन्द्रिय चेतना को विकसित करने के लिए इन्द्रिय संयम आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

एक रूपक है। राजप्रासाद में एक दासी प्रति-दिन राजा और महारानी की शय्या तैयार करती थी। एक दिन उस मुलायम शय्या को देखकर उनके के अन्तर्मानस में यह विचार उद्बुद्ध हुआ—शय्या तो बहुत ही मुलायम है दो क्षण सोकर देखूं कितना आनन्द आता है और ज्योंही उसने सोने का उप-क्रम किया त्योंही उसे गहरी निद्रा आ गई। उसे पता ही नहीं चला, कितना समय बीत गया है। जब सम्राट सोने के लिए महल में पहुँचे अपनी शय्या पर दासी को सोया हुआ देखकर उनका क्रोध सातवें आसमान में पहुँच गया और जो हाथ में बेंत की छड़ी थी, उससे जोर से उसकी पीठ पर मारी। दासी हड़बड़ाकर उठ बैठी। सम्राट को देखकर वह एक क्षण स्तम्भित रह गई। सम्राट ने कहा– तेरी हिम्मत कैसे हुई ? मेरी शय्या पर तू कैसे सो गई? और उन्होंने दूसरी बेंत उसकी पीठ पर दे मारी। दासी खिलखिलाकर हँसने लगी। ज्यों-ज्यों बेंत लग रहे थे रोने के स्थान पर वह हंस रही थी। सम्राट ने अन्त में उसे हँसने का कारण पूछा। उसने कहा—राजन् ! मैं भूल से कुछ समय सो गई जिससे इतनी मार सहन करनी पड़ी है। आप तो इस पर रात-दिन सोते हैं तो बताइये आपको कितनी मार सहन करनी पड़ेगी। नरक में कितनी दारुण वेदना भोगनी पड़ेगी।

दासी की बात सुनकर सम्राट को चिन्तन करने के लिए बाध्य होना पड़ा कि इन्द्रिय असंयम कितना खतरनाक है। इन्द्रिय असंयम के कारण ही आत्मा विविध योनियों में भटकता है और दारुण वेदना का अनुभव करता है। इसलिए इन्द्रिय संयम का महत्व समझें। एक-एक इन्द्रिय के आधीन होकर प्राणी अपने प्यारे प्राणों को गँवा बैठता है पर जो पाँचों इन्द्रियों के अधीन होता है उसको कितनी वेदना भोगनी पड़ती है ? ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती को

(शेष पृष्ठ ४९२ पर)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org